1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को नव वर्ष चैत्र प्रतिपदा 2075 एवं आर्यसमाज स्थापना दिवस (18 मार्च) की

हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 41, अंक 20 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 5 मार्च, 2018 से रविवार 11 मार्च, 2018
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें– www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसमाज करोल बाग के तत्त्वावधान में

अमर शहीद पं. लेखराम जी के 121वें बलिदान दिवस पर विचार गोष्ठी सम्पन्न

"दलित समाज को हिन्दुओं से अलग करने का राजनैतिक षड़यन्त्र"

"आर्यसमाज की स्थापना महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदों व वैदिक साहित्य को जन-जन तक पहुंचाने हेतु की थी। महर्षि जी ने 'वेदों की ओर लौटो' का उद्घोष करते हुए यह भी कहा कि संसार के प्रत्येक व्यक्ति को वेद पढ़ने का अधिकार है। ऐसे में वेदों में सभी मनुष्य समाज हैं कोई ऊंच-नीच का भाव वेदों में नहीं है।" ये विचार आर्य विद्वान डॉ. विनय विद्यालंकार ने अमर बलिदानी पं. लेखराम जी के बलिदान दिवस के अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसमाज करोलबाग द्वारा आयोजित विचार गोष्ठी में व्यक्त किए जिसका विषय था - "दलित समाज को हिन्दुओं से अलग करने का राजनैतिक षड़यन्त्र"। उन्होंने आगे कहा कि अस्पृश्यता या छूआछूत जैसे शब्द भी वेदों में कहीं नहीं है, इसलिए जो जाति भेद, स्वर्ण दलित, ऊंच-नीच आज प्रचलित है। यह कुछ शताब्दी पूर्व ही प्रचलन में आया है। इसी का दुष्परिणाम हुआ कि हिन्दू समाज अनेक जातियों एवं उपजातियों में बंट गया। ब्राह्मादि उच्च जातियों ने शूद्र आदि को

विचार गोष्ठी को सम्बोधित करते डॉ. विनय विद्यालंकार जी, डॉ. राजकुमार फुलवारिया, पूर्व मेयर श्री योगेन्द्र चन्दोलिया जी एवं संयोजक श्री कीर्ति शर्मा जी

विचार गोष्ठी में वैदिक विद्वानों के विचारों को सुनने के लिए उपस्थित महानुभावों से भरा हुआ आर्यसमाज करोल बाग का हॉल

- शेष पृष्ठ 5 पर

।। ओ३म्।।
आर्यसमाज मन्दिर जहाँगीर पुरी
के - 1046, जहाँगीर पुरी, दिल्ली-110033
(के - ब्लाक हरित पट्टी निकट गुरुद्वारा)
का
39वां वार्षिकोत्सव एवं
भवन उद्घाटन समारोह
रविवार 11 मार्च, 2018 प्रातः 9 बजे से 2 बजे तक
उद्घाटन : महाशय धर्मपाल जी (चेयरमैन, एम.डी.एच.)
आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर समारोह के साक्षी बनें एवं आर्यसमाज के नए भवन के निर्माण कार्य में अपना सहयोग प्रदान करें।
निवेदक
धर्मपाल आर्य, प्रधान
विनय आर्य, महामन्त्री
विद्यामित्र ठुकराल, कोषाध्यक्ष
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
दिनेश चन्द्र आर्य, प्रधान, 9953302185
डॉ. रामभरोसे, मन्त्री, 9999145278
अरविन्द कुमार, कोषाध्यक्ष, 9811676911
आर्यसमाज जहाँगीरपुरी, के.-1046, जहाँगीरपुरी, दिल्ली-110033

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
दिल्ली की सभी आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से
आर्य केन्द्रीय सभा (दिल्ली राज्य)
के तत्त्वावधान में
नव सम्वत्सर 2075 की पूर्व संध्या के अवसर पर
144 वाँ आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह
चैत्र अमावस्या विक्रमी सम्वत् 2074, तद्नुसार
शनिवार, 17 मार्च, 2018
स्थान - मावलंकर हॉल, रफी मार्ग, नई दिल्ली-110001
कार्यक्रम
यज्ञ .... दोपहर: 1.30 से 2.45 तक
दीप प्रज्वलन .... दोपहर: 2.43 से 3.00 तक
सार्वजनिक सभा .... दोपहर: 3.00 से 6.00 तक
इस अवसर पर वैदिक विद्वानों एवं आर्य कार्यकर्त्ताओं को स्मृति पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जायेगा।
'एक रूपीय यज्ञ' की प्रस्तुति में प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले याज्ञिकों को सम्मानित किया जायेगा।
शान्ति पाठ एवम् प्रसाद वितरण
परिवार एवं इष्ट मित्रों सहित पहुँच कर कार्यक्रम को सफल बनायें

वेद-स्वाध्याय

परमेश्वराय नमो नमः

नमोऽस्तु त निर्ऋते तिग्मतेजोऽयस्मयान् वि चृता बन्धपाशान्।
यमो मह्यं पुनरित् त्वां ददाति तस्मै यमाय नमो अस्तु मृत्यवे।। - अथर्व. 6/63/2
ऋषिः **दुह्वणः।।** देवता - **यमः।।** छन्दः **जगती।**

शब्दार्थ - **निर्ऋते** = हे कृच्छ्रापत्ते/ हे भारी विपद्! **ते नमः अस्तु** = मैं तुझे नमस्कार करता हूं **तिग्मतेजः**= हे तीक्ष्ण तेजवाली! तू मेरी **अयस्मयान् बन्धपाशान्** = बड़ी सुदृढ़ बांधने वाली बेड़ियों को **विचृत** = काट डाल। **यमः** = नियमन करने वाला परमेश्वर **पुनः इत्** = फिर भी **मह्यम्** = मेरे लिए **त्वाम्** = तुझे **ददाति** = दे रहा है **तस्मै** = उस **मृत्यवे** = मृत्युरूप, संहारक **यमाय** = नियमन करने वाले परमेश्वर को भी **नमो अस्तु** = मेरा नमस्कार है।

विनय- मुझ पर आई हुई हे भारी विपत्ते। मैं तुझे नमस्कार करता हूं। मैं जानता हूं कि इस संसार में हम पर जो कष्ट, क्लेश, दुःख-दर्द आते हैं वे हमारे भले के लिए, हमें हल्का करने के लिए ही आते हैं, अतः मैं तेरा स्वागत करता हूं। हे भारी-से-भारी विपत्ते! तुम आओ और मेरे भारी-से-भारी बन्धनों को, पाशों को काट जाओ। तुम तो बन्धन काटने के लिए ही आया करती हो। हमने पाप करके अपने-आपको बांध लिया होता है, तुम दुःख भुगाकर हमें उस पाप के बन्धन से छुड़ा जाती हो। हे विपत्तियो! तुम तो बड़ी कल्याणकारी, मङ्गलकारी हो। हम जो पहले बड़े-बड़े पाप कर चुके हैं उनके कारण हमारी उन्नति रुक जाती है,उनके बोझ से हम दब गये होते हैं। जब तक वह बोझ उतर न जाए, वह ऋण चुक न जाए, तबतक हम आगे बढ़ने से वञ्चित हो जाते हैं। विपत्तियां तो हमें आगे बढ़ने से रोकनेवाली हमारी इन बेड़ियों को काट जाती हैं। इसलिए हे भारी विपत्ते! तू मुझपर अपने तीक्ष्ण-तेज के साथ आ। तू मेरे किसी बड़े भारी पाप-समूह का फल दीखती है, इसीलिए तू इतने तीक्ष्ण क्लेश-सन्तापवाली है, परन्तु तू आकर मेरी उतने ही बड़े सुदृढ़, उतने ही बड़े कठोर और उतने ही भारी बाधा डालने वाले पाश को काट जा। तेरा जितना ही तीक्ष्ण सन्ताप है, उतनी भारी मेरी बेड़ी कटेगी, यह मुझे विश्वास है। अतएव मैं, हे घोर विपत्ते! तुझ से घबराता नहीं हूं। मैं तेरा प्रसन्नता से स्वागत करता हूं। पहले भी मुझे कई बार घोर कष्ट आ चुके हैं, पर उस सर्वनियन्ता प्रभु ने आज फिर मेरे लिए तुझे भेजा है। पिछली विपदों से भी मैं कुछ हल्का हुआ था, पर आज उस यम प्रभु ने फिर से मेरे लिए भारी विपत्ति को दिया है कि इसकी असह्य तीक्ष्णताओं से तो मेरे वे सब लोहमय दुर्भेद्य पाश जो और किसी प्रकार कट नहीं सकते थे वे भी कट जाएंगे, अतः मैं उस मृत्युरूप को भी आज नमस्कार करता हूं। उसका रुद्ररूप भी शिव होता है, संहारकरूप भी कल्यायणकारी होता है-यह मैं जानता हूं। उसके सुख-शान्तिदाता सौम्य रूप को तो मैं सदा नमस्कार करता ही रहा हूं, परन्तु आज तुझ घोर विपत्ति के भेजने वाले उसके मृत्युरूप को भी नमस्कार करता हूं। हे उसकी भेजी हुई मेरी विपत्ति! तू आ, तेरा स्वागत है।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

दलित-मुस्लिम गठजोड़ : दलित समाज को हिन्दुओं से अलग करने का राजनैतिक षड़यन्त्र

दिखने में भले ही यह दलित- मुस्लिम गठजोड़ राजनीतिक सा लगता हो लेकिन अन्दर ही अन्दर इसे सामाजिक धरातल पर अमली जामा पहनाया जा रहा है। इस वर्ष अमर बलिदानी पंडित लेखराम जी के बलिदान दिवस पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य समाज करोलबाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में अत्यंत ज्वलंत विषय ''दलित समाज को हिन्दुओं से अलग करने का राजनैतिक षडयंत्र'' चर्चा का मुख्य बिन्दु रहा। यह विषय उठाना आज के समय की तर्कसंगत मांग है यदि अभी इस पर ध्यान नहीं दिया गया तो भविष्य में जो परिणाम सामने आयेंगे वे देश, धर्म और समाज के लिए बेहद निराशाजनक होंगे।

इस विषय पर इतिहास का एक प्रसंग जरूरी है। जब हस्तिनापुर में षडयंत्र पर षडयंत्र रचे जा रहे थे उस समय महात्मा विदुर ने पितामह भीष्म से कहा था कि 'पितामह जब हस्तिनापुर में पाप की नदी बह रही होगी तब मैं और आप उसके किनारे खड़े होंगे।' भीष्म पितामह ने पूछा, 'किनारे पर क्यों?' तो विदुर ने कहा था-'कि कम से कम मैं और आप इन षडयंत्रों पर चर्चा तो कर लेते हैं, बाकी तो वह भी जरूरी नहीं समझते।' कहने का आशय यही है कि आज यह विषय बेहद प्रासंगिक है। इस पर चर्चा और कार्य भी जरूरी है। एक छोटा सा उदहारण शायद इस षडयंत्र को समझने में देर नहीं लगायेगा। हाल ही में पाकिस्तान के अन्दर एक हिन्दू महिला कृष्णा कुमारी कोल्ही को वहां की सीनेट (राज्यसभा सदस्य) के लिए निर्वाचित किया गया है। लेकिन भारत समेत विश्व भर की मीडिया ने इस खबर को कुछ इस तरह पेश किया कि पाकिस्तान में कृष्णा कुमारी कोल्ही सीनेट के लिए निर्वाचित होने वाली देश की पहली हिन्दू दलित महिला बन गई है।

हर एक मीडिया घराने ने इसमें हिन्दू के साथ दलित शब्द का उपयोग क्यों किया! मतलब साफ है कि यह खबर इसी षडयंत्र का हिस्सा है। पिछले वर्ष गुजरात में घटित ऊना की एक घटना के बाद से दलितों के उत्थान के नाम पर रैलियां कर बरगलाया जा रहा है। इन रैलियों में दलितों के साथ-साथ मुसलमान भी बढ़-चढ़कर भाग ले रहे हैं। ऐसा दिखाने का प्रयास किया जा रहा है कि मुसलमान दलितों के हमदर्द है। इसके बाद भीमा कोरेगांव में शौर्य दिवस और वहां उपस्थित मुस्लिम संगठन पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया, मूल निवासी मुस्लिम मंच, छत्रपति शिवाजी मुस्लिम ब्रिगेड, दलित इलम आदि संगठन थे। इसके बाद दलितों पर अत्याचार की कहानी सुनाई गई। यह कि आज भी दलितों पर अत्याचार होता है और अत्याचार करने वाले सिर्फ हिन्दू होते हैं।

दरअसल देश में सरकारी आंकड़े बताते हैं कि दलित करीब 20 फीसदी है और मुसलमान 15 फीसदी। दोनों मिलकर 35 फीसदी के लगभग हैं। क्यों न इसकी वर्तमान में राजनितिक और भविष्य में धार्मिक खुराक बनाई जाये। क्योंकि सभी जानते हैं कि बाकी हिन्दू समाज तो ब्राह्मण, बनिया, यादव, जाट, राजपूत आदि में विभाजित है। गौरतलब बात यह है कि दलितों को भड़काने वालों के दलित नेताओं के लिए डॉ. अम्बेडकर के इस्लाम के विषय में विचार भी कोई मायने नहीं रखते। डॉ. अम्बेडकर ने इस्लाम स्वीकार करने का प्रलोभन देने वाले हैदराबाद के निजाम का प्रस्ताव न केवल खारिज कर दिया अपितु 1947 में उन्होंने पाकिस्तान में रहने वाले सभी दलित हिन्दुओं को भारत आने का सन्देश दिया। डॉ. अम्बेडकर 1200 वर्षों से मुस्लिम हमलावरों द्वारा किये गए अत्याचारों से परिचित थे। वे जानते थे कि इस्लाम स्वीकार करना कहीं से भी जातिवाद की समस्या का समाधान नहीं है, क्योंकि इस्लामिक फिरके तो आपस में ही एक दूसरे की गर्दन काटते फिरते हैं। वह जानते थे कि इस्लाम स्वीकार करने में दलितों का हित नहीं अहित है। लेकिन आज डॉ. अम्बेडकर की तस्वीर मंच पर सजाकर उसके इस्लाम के प्रति विचारों को किनारे कर दफनाने का कार्य किया जा रहा है। वामपंथी सोच वाला प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया इस षडयंत्र में महत्वपूर्ण भूमिका सी निभाता दिख रहा है। समाजवाद का ढ़ोल पीटने वाले भारतीय राजनितिक दल इस्लामवाद की चपेट में आकर दलित समुदाय के सामाजिक विकास को प्रोत्साहन देने के बजाय उल्टा उनको इस्लामवाद की भट्टी में झोंकने में तत्पर से दिखाई दे रहे हैं।

....देश में सरकारी आंकड़े बताते हैं कि दलित करीब 20 फीसदी है और मुसलमान 15 फीसदी। दोनों मिलकर 35 फीसदी के लगभग हैं। क्यों न इसकी वर्तमान में राजनितिक और भविष्य में धार्मिक खुराक बनाई जाये। क्योंकि सभी जानते हैं कि बाकी हिन्दू समाज तो ब्राह्मण, बनिया, यादव, जाट, राजपूत आदि में विभाजित है। गौरतलब बात यह है कि दलितों को भड़काने वालों के दलित नेताओं के लिए डॉ. अम्बेडकर के इस्लाम के विषय में विचार भी कोई मायने नहीं रखते। ....

जनवाद के नाम से नये मंच तैयार किये जा रहे हैं। जिनमें दलितों को भारतीय महापुरुषों के प्रति घृणा का पाठ पढ़ाया जा रहा है। उन्हें बताया जा रहा है कि दलित एवं पिछड़े वर्ग को तो होली, दशहरा, दिवाली एवं भारतीय महापुरुषों के जन्मोत्सव तक नहीं मनाने चाहिए। रावण को उनका आराध्य देव बताकर नफरत सिखाई जा रही है। क्या ये जनवादी और अम्बेडकर के नाम पर रोटी तोड़ने वाले तथाकथित दलित हितेषी दल इस नफरत से दलितों को अपने ही धर्म और समाज से दूर करने का प्रयास नहीं कर रहे हैं?

आर्य समाज हमेशा से ही सामाजिक समरसता, जातिवाद और छुआछूत का विरोधी रहा है। आर्य समाज ने दलित उत्थान को सामाजिक धरातल पर तो उतारा ही साथ में बलिदान भी दिए। पंडित लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द यदि दलित समाज के उत्थान के लिए शुद्धि का आन्दोलन न चलाते तो क्या मजहबी उन्मादी उनकी हत्या करते? सबसे पहले आर्य समाज ने पुरोहितवाद पर हमला किया, शूद्र समझे जाने वाले वर्ग को सीने से तो लगाया ही साथ ही उनको वह सब अधिकार दिलाये जिस पर हिन्दू धर्म को अपनी बपौती समझने वाले अपना जन्म सिद्ध अधिकार समझते थे। लोगों को बताया कि वर्ण व्यवस्था कर्म के आधार पर थी न कि जन्म के आधार पर!

आज यदि कोई जाति व्यवस्था को जन्म साथ जोड़ता है तो वह निःसंदेह धर्म को तोड़ने का कार्य कर रहा है। यदि हम भारत को पुनः वैभवशाली बनाना चाहते हैं तो यह धारणा स्थापित करनी पड़ेगी कि सम्पूर्ण हिन्दू एक हैं, उसका प्रत्येक जन मेरा प्रिय भाई है। उन्हें महसूस होना चाहिए कि हम हिन्दू समाज का अटूट अंग है और हमें जाति के नाम पर अलग करने वाले अपना राजनैतिक स्वार्थ पूरा कर रहे हैं। इस बार पंडित लेखराम जी के बलिदान दिवस पर हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम सभी जातिमुक्त और जाति के आधार पर भेदभाव को समाप्त करने की प्रक्रिया को अधिक निष्ठा के साथ व्यावहारिक जीवन पद्धति में अपनायें यही पंडित लेखराम जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजली होगी और दलित मुस्लिम गठजोड़ को अमली जामा पहनाने वालों के मुंह पर कालिख होगी।

- सम्पादक

प्रेरक कार्य

कपूर परिवार की नई सामाजिक पहल

.....इस समाज सेवी परिवार ने अपने निमन्त्रण पत्र में लिखा कि हमारे सुपुत्र "सामयक संग वसुंधरा" की शादी के समारोह में आप सभी सपरिवार आमंत्रित है। कृपया उपहार न लाये और कार्ड में दी गयी तालिका का अनुपालन करें। इसे एक सामाजिक पहल के रूप में ले। .....दूसरी मेज पर आप पुराने कपड़ों को जो अच्छी स्थिति में हो दान कर सकते हैं, धोकर उन्हें इस्त्री कर भी ला सकते है ये निर्धन, वंचितों की सहायता के लिए आर्य समाज के एक उद्यम सहयोग के लिए हैं आप जरूरतमंद लोगों के लिए नये कपड़े भी दे सकते हैं। सहयोग का नारा "आपका सामान जरुरतमंद की मुस्कान" है।

अमूमन हमारे आधुनिक समाज में शादी विवाह में या तो अतिथि सेवा पर जोर रहता है या फिर बाहरी चमक-दमक और दान दहेज आदि पर, लेकिन इनके साथ यदि कोई शादी विवाह में डॉ. मुकुल कपूर की तरह कुछ अलग हटकर समाज सेवा में सहयोग करें तो निश्चित ही वह खबर समूचे समाज के लिए प्रेरणा का विषय बन जाती है। दरअसल अभी पिछले दिनों होटल रेडिसन ब्लू में समारोह था। डॉ. मुकुल कपूर और श्रीमती अजंली कपूर के बेटे सामयक संग वसुंधरा के विवाह का जिसमें मुकुल कपूर ने निमन्त्रण पत्र में ही समाज सेवा के प्रति अपना समर्पण दर्शा दिया था।

इस समाज सेवी परिवार ने अपने निमन्त्रण पत्र में लिखा कि हमारे सुपुत्र "सामयक संग वसुंधरा" की शादी के समारोह में आप सभी सपरिवार आमंत्रित है। कृपया उपहार न लाये और कार्ड में दी गयी तालिका का अनुपालन करें। इसे एक सामाजिक पहल के रूप में ले।

हमारे यहाँ पहली मेज पर आप अंग दान के विभिन्न पहलुओं के बारे में बारीकी से समझ सकते हैं और अपने अंगों को दान करने के प्रति वचन पर हस्ताक्षर कर सकते हैं।

दूसरी मेज पर आप पुराने कपड़ों को जो अच्छी स्थिति में हो, दान कर सकते हैं, धोकर उन्हें इस्त्री करके भी ला सकते हैं। ये निर्धन, वंचितों की सहायता के लिए आर्य समाज के एक उद्यम सहयोग के लिए है। आप जरूरतमंद लोगों के लिए नये कपड़े भी दे सकते हैं। सहयोग का नारा "आपका सामान जरुरतमंद की मुस्कान" है। सहयोग आर्य समाज की एक इकाई अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के साथ कार्य करता है, जो एक ऐसा संगठन है, जो मुख्य रूप से अनुसूचित जनजातियों और अनुसूचित जातियों से गरीबी, निरक्षरता, और सामाजिक असहिष्णुता से ग्रस्त राज्यों से वंचित बच्चों को शिक्षित करने के लिए समर्पित है। सहयोग आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछड़े वर्गों के बच्चों के उत्थान के लिए प्रतिबद्ध है। सहयोग का कार्य, उद्देश्य, शिक्षा और कौशल प्रशिक्षण प्रदान करना है ताकि इन लोगों को मुख्यधारा के समाज में लाया जा सके ताकि ये बच्चें आगे चलकर राष्ट्र निर्माण में सहायता कर सकें। सहयोग कम विकसित क्षेत्रों और भारत के राज्यों में काम कर रहा है। देश के लगभग 10 राज्यों में सहयोग के 40 केंद्र हैं।

तीसरी मेज शारीरिक रूप से विकलांग वयस्कों को रोजगार देने के लिए लगाई गयी है। आप अपने घरों से पुराने समाचार पत्र आदि ला सकते हैं। इन सामानों से पेंसिल, गुरुद्वारा से प्राप्त सामग्री, शगुन लिफाफे, पर्दे और अन्य मोटी सामग्री से बैग बनाना आदि का कार्य किया जाता है। आवश्यकताओं वाले वयस्कों के लिए एक स्थायी एकीकृत समुदाय बनाने के लिए यह एक मिशन है ताकि वह एक सार्थक और प्रतिष्ठित जीवन जी सके।

स्वागत समारोह में आपको देखने के लिए उत्सुक हैं- अंजलि और मुकुल कपूर

इस तरह होटल रेडिसन ब्लू में होने वाली इस शादी का निमंत्रण पत्र कपूर परिवार के मित्रों, रिश्तेदारों और अन्य सगे सम्बन्धियों तक पहुंचा। लोग विवाह में शामिल तो हुए ही साथ ही यहाँ पर लगे सहयोग के स्टाल पर 43 लोगों ने कपड़े भी दिए। विवाह में उपस्थित सभी अतिथियों ने कपूर के साथ-साथ समाज सेवा में लगी इन संस्थाओं की भी भरपूर सराहना की। विवाह का शुभ कार्य भली प्रकार संपन्न हुआ।

असल में समाज सेवा का ज़ज्बा कई बार जुनून में बदल जाता है। जब यह जुनून में बदल जाता है तो परिणाम बेहद शानदार रहते हैं और पूरे समाज को इसका फायदा मिलता है. सामाजिक कार्य का सीधा सा अर्थ है कि सकारात्मक, और सक्रिय हस्तक्षेप के माध्यम से लोगों और उनके सामाजिक माहौल के बीच कार्यकर प्रोत्साहित करके कमजोर व्यक्तियों की क्षमताओं को बेहतर करना ताकि वे अपनी जिंदगी की जरूरतें पूरी करते हुए अपनी तकलीफों को कम कर सकें।

आज से कुछ महीनों पहले यही सब सोच विचार कर महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से आर्य समाज अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ ने आदिवासी, गरीब और जंगलों में रहने वाले बच्चों के लिए सहयोग नाम से एक निस्वार्थ योजना का गठन किया जिसका उद्देश्य इन गरीब बच्चों तक वे कपड़े, जूते, खिलोने और किताबे पहुचाई जाये जो आपके किसी इस्तेमाल की न रही हो। जिसे आप फेंकने जा रहे हो जरा सोचिये आपका यह अनुपयोगी सामान यदि किसी गरीब की मुस्कान बन जाये तो आपकी आत्मा जरुर कहेगी कि आपने अपने मनुष्य होने का धर्म अदा कर दिया।

महाशय जी ने जिन गरीब आश्रितों के लिए जो सपना देखा था उस सपने को एक कदम आगे बढ़ाते हुए कपूर परिवार ने जो प्रेरणादायक कार्य किया उससे पूरे समाज को आज सोचने पर मजबूर किया कि यदि किसी शादी विवाह या अन्य पारिवारिक सामाजिक आयोजनों में इस तरह की पहल की जाये तो निश्चित ही समाज को एक अच्छी दिशा दी जा सकती हैं। यह एक ऐसी पहल जो अनावश्यक खर्च तो कम करेगी ही साथ ही समाज के लिए कुछ कर गुजरने का जज्बा भी पैदा करेगी। सोचिये विवाह में वर-वधू परिणय सूत्र में भी बंध जाये साथ ही किसी गरीब आदिवासी की मुस्कान भी खिल जाये तो सच्चे अर्थो में यह ईश्वर का आशीर्वाद ही कहा जायेगा। - *राजीव चौधरी*

बोध कथा

मोह-ममता की रस्सी खोलो!

काशी में कुछ पण्डित थे। जब एक पर्व समीप आया तो उन्होंने सोचा- चलो, यह पर्व प्रयागराज में चलकर मनायें। वे बैठ गये एक बहुत बड़ी और अच्छी-सी नाव में। सायंकाल का समय था। रात्रि होने वाली थी। उसका अंधेरा बढ़ता जाता था। सबने सोचा- 'रात-भर नौका चलायेगे। प्रात: प्रयागराज में पहुंचकर स्नान करेंगे, पर्व मनायेंगे।' काशी के कुछ लोगों को भांग बहुत प्यारी होती है। इसलिए नौका में भांग का भी प्रबन्ध था। सब लोगों ने भांग पी। गीत गाने लगे। कुछ लोग चप्पू चलाने लगे। सूब मस्ती के साथ वे गीत गा रहे थे। खूब जोश के साथ चप्पू चला रहे थे। पहले लोग थक जाते तो दूसरे लोग चप्पू चलाने लगते। बीच-बीच में भांग भी पीते। मिठाई भी खाते। लगातार चप्पू भी चलाते। रात्रि हो गई। तारे निकल आए। वे चप्पू चलाते रहे। खूब मज़े से गीत भी गाते रहे। प्रात:काल का प्रकाश हुआ तो एक व्यक्ति ने कहा-''अब तो दिन निकलने वाला है। प्रयागराज आ गया होगा। तनिक उठकर देखो तो सही कि कहां तक पहुंचे हैं।''

तब एक व्यक्ति उठा। सामने वाले किनारे को देखकर बोला- ''मुझे तो यह काशी जी का घाट प्रतीत होता है।''

दूसरे बहुत ज़ोर से हंस उठे; बोले- ''प्रतीत होता है? भांग अधिक पी गया है। इसे प्रयाग में भी काशी दिखाई देती है।''

एक पुरोहित जी थे। उनसे कहा गया- ''आप उठकर देखो, पुरोहित जी! यह व्यक्ति तो भांग के नशे में है।''

पुरोहित जी आंखें मलते हुए उठे। आंखें फाड़कर उन्होंने सामने देखा। धीमी- सी आवाज़ में बोले-''शायद मैं भी नशे में हूं। मुझे तो यह काशी का घाट प्रतीत होता है।''

सब लोग फिर हंस उठे-''यह भी नशे में है। रातभर हम चलते रहे और इसे अभी तक काशी दिखाई देती है। तूम उठो भाई! तुम देखो तनिक ध्यान से।''

तब तीसरा व्यक्ति उठा। उसने अधिक ध्यान से देखा और चिल्ला उठा-''अरे! आश्चर्य है, यह तो सचमुच काशी जी का घाट है।''

फिर एक-एक करके सबने देखा कि नाव उसी घाट पर खड़ी है, जहां पर वे सायंकाल नाव में बैठे थे। परन्तु यह हुआ कैसे? रात-भर वे चप्पू चलाते रहे, फिर नाव जहां-की-तहां खड़ी रही तो किस प्रकार?

तब किसी ने देखा और कहा-''अरे! देखो, आश्चर्य तो यहां हुआ पड़ा है। जिस कील के साथ नाव की रस्सी बंधी थी उसके साथ तो अब भी बंधी है। भांग के नशे में हम उस रस्सी को खोलना ही भूल गये।''

अरे ओ चप्पू चलाने वालो! इस रस्सी को तो खोलो! मोह और ममता की, राग और लगाव की यह जो रस्सी तुमने अपनी नाव को बांध रक्खी है, उसे खोले बिना, उससे छुटकारा पाये बिना, तुम्हारे चप्पू चलाने से भी यह नौका पहुंचेगी नहीं।

- *महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती*

साभार : बोध कथाएं

बोध कथाएँ: वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

121वें पं. लेखराम बलिदान दिवस (6 मार्च) पर विशेष

शुद्धि के रण का रणबाँकुरा पंडित लेखराम

....आज जब भी हवा का रुख उस इतिहास की ओर मुड़ता है तो एक ऐसे ही महापुरुष विद्वान की ओर जरूर जाता है जिनका नाम आर्य मुसाफिर पंडित लेखराम हैं। पर दुर्भाग्य इस भारत भूमि का कि लोग आज पोर्न स्टार का नाम तो जानते हैं लेकिन ऐसे महापुरुषों का नाम तक नहीं जानते।.....

जब भारत वर्ष में मुगलकाल खत्म होकर राजनितिक स्तर पर अपनी अंतिम सांसे गिन रहा था उस समय के स्कूली इतिहास के आंचल से कुछ नाम समेटने बैठे तो इतिहास कुछ गिने चुने नाम देकर अपनी पलक झपका लेता है. लेकिन जब उसे कुरेदें तो उसमें ऐसे असंख्य महापुरुषों के नाम हैं जिनके अन्दर वैदिक धर्म को बचाने का जुनून था लेकिन साम्राज्य की भूख नहीं थी। वे नाम जिनके पास पैदल, अश्व, हाथी की सेना नहीं थी बस इस सत्य सनातन धर्म को बचाने के लिए विचारों का बल था. हाथ में शस्त्र नहीं बस महर्षि दयानन्द सरस्वती जी दिया हुआ एकमात्र सत्यार्थ प्रकाश रूपी शास्त्र था जिससे वैदिक धर्म के शत्रु परास्त होते जा रहे थे।

आज जब भी हवा का रुख उस इतिहास की ओर मुड़ता है तो एक ऐसे ही महापुरुष विद्वान की ओर जरूर जाता है जिनका नाम आर्य मुसाफिर पंडित लेखराम हैं। पर दुर्भाग्य इस भारत भूमि का कि लोग आज पोर्न स्टार का नाम तो जानते हैं लेकिन ऐसे महापुरुषों का नाम तक नहीं जानते। इस महान आर्य बलिदानी का जन्म चौत्र शुक्ल 8, सम्वत् 1915 (सन् 1858) को ग्राम सैदपुर (जिला झेलम) में सारस्वत ब्राह्मण परिवार में श्री तारासिंह मोता तथा भागभरी देवी के पुत्र के रूप में हुआ था। पंडित लेखराम के दादा श्री नारायण सिंह महाराज रणजीत सिंह की सेना के वीर योद्धा थे। पं. लेखराम ने उर्दू-फारसी की शिक्षा प्राप्त की। वे बचपन से ही प्रतिभावान थे। उनके चाचा पेशावर में पुलिस अधिकारी थे। उन्होंने अपने भतीजे को पुलिस में भर्ती करा दिया। सार्जेन्ट का पदभार संभालने के साथ-साथ उन्होंने गीता, रामायण तथा अन्य धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन जारी रखा।

इधर लेखराम जी अपने अध्यन में व्यस्त थे। क्रन्तिकारी देश की स्वाधीनता की लड़ रहे थे। हिन्दू मुस्लिम एकता के गीत गाये जा रहे थे। लेकिन दूसरी ओर सामाजिक स्तर पर मुल्ला-मौलवियों का धर्मांतरण का कुचक्र जारी था। ठीक इसी समय पंडित लेखराम ने दयानन्द सरस्वती जी के अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ा तथा अपना जीवन वैदिक धर्म के प्रचार में लगाने का संकल्प लिया। सन् 1881 में उन्होंने अजमेर पहुंचकर स्वामी जी के दर्शन किए। उनके पांडित्य तथा तेजस्विता से प्रभावित होकर सरकारी नौकरी त्यागकर आर्य प्रचारक बन गए। पंडित लेखराम ने पेशावर में आर्य समाज की स्थापना की तथा साप्ताहिक पत्र ''धर्मोपदेश'' का प्रकाशन शुरू किया।

यही से उनके जीवन ने एक ऐसी अंगड़ाई ली कि मामूली सा पंडित लेखराम धर्मांतरण करने वालो वैदिक धर्म के विरुद्ध प्रचार करने वालों के लिए लाहौर पेशावर आदि स्थानों में खोफ बन गया. पंडित लेखराम ने मुल्ला-मौलवियों के आक्षेपों का मुंहतोड़ उत्तर देना शुरू किया। वे जहां लेखनी के धनी थे वहीं एक प्रभाव शाली वक्ता भी थे। उनके तर्कपूर्ण भाषण सुनकर बड़े-बड़े मुल्ला-मौलवी व पादरी हतप्रभ रह जाते थे। अहमदिया सम्प्रदाय के संस्थापक मिर्जा गुलाम अहमद कादयानी तथा उसके समर्थकों ने वैदिक-हिन्दू धर्म पर आक्षेप लगाए तो पंडित जी कादियां जा पहुंचे तथा मिर्जा को शास्त्रार्थ की चुनौती दी। उन्होंने उर्दू भाषा में ''बूसहीन अहमदिया'' तथा ''खब्त अहमदिया'' पुस्तकें लिखकर अहमदिया सम्प्रदाय को चुनौती दी। पंडित लेखराम ने इस्लामीकरण के दुष्प्रयासों को असफल करने के लिए मुस्लिम बने हजारों व्यक्तियों को शुद्ध कर पुन: वैदिक धर्म में दीक्षित किया। वे शुद्धि के लिए जगह-जगह पहुंच जाते थे। लोग उन्हें ''आर्य मुसाफिर'' कहने लगे थे।

1896 की एक घटना पंडित लेखराम के जीवन से हमें सर्वदा प्रेरणा देने वाली बनी रहेगी। पंडित जी प्रचार से वापिस आये तो उन्हें पता चला की उनका पुत्र बीमार है। पर ठीक उसी समय उन्हें पता चला की मुस्तफाबाद में पांच हिन्दू मुसलमान होने वाले हैं। लेकिन इस पंडित जी कहा कि मुझे अपने एक पुत्र से जाति के पांच पुत्र अधिक प्यारे हैं। सवा साल का इकलोता पुत्र चल बसा। अपने धर्म के प्रति निष्ठां और प्रेम में पंडित जी ने शोक करने का समय कहाँ था। वापस आकर वेद प्रचार के लिए वजीराबाद चले गए।

कोट छुट्टा डेरा गाजीखान (अब पाकिस्तान) में कुछ हिन्दू युवक मुसलमान बनने जा रहे थे. पंडित जी के व्याखान सुनने पर ऐसा रंग चड़ा की आर्य बन गए और इस्लाम को तिलांजलि दे दी। गंगोह जिला सहारनपुर की आर्यसमाज की स्थापना पंडित जी से दीक्षा ली थी। कुछ वर्ष पहले तीन अग्रवाल भाई पतित होकर मुसलमान बन गए थे। आर्य समाज ने 1894 में उन्हें शुद्ध करके वापिस वैदिक धर्मी बना दिया। यही नहीं जम्मू के श्री ठाकुरदास मुसलमान होने जा रहे थे। पंडित जी उनसे जम्मू जाकर मिले और उन्हें मुसलमान होने से बचा लिया। इसके बाद जब पंडित जी से एक बार पूछा गया कि हिन्दू इतनी बड़ी संख्या में मुसलमान कैसे हो गए? तो पंडित जी सात कारण बताये।-

(1) मुसलमान आक्रमण में बलपूर्वक मुसलमान बनाया गया।

(2) मुगलकाल में जर, जोरू व जमीन देकर कई प्रतिष्ठित हिन्दुओं को मुस्लमान बनाया गया ।

(3) इस्लामी काल में उर्दू, फारसी की शिक्षा एवं संस्कृत की दुर्गति के कारण बने।

(4) हिन्दुओं में विधवा पुनर्विवाह न होने के कारण इस कुरीति ने भी अनेक औरतों को इस कुण्ड में धकेला। अगर किसी हिन्दू युवक का मुसलमान स्त्री से सम्बन्ध हुआ तो उसे जाति से निकल कर मुसलमान बना दिया गया।

(5) मूर्तिपूजा की कुरीति के कारण कई हिन्दू विधर्मी बने।

(6) मुस्लिम वैश्याओं ने कई हिन्दुओं को फंसा कर मुसलमान बना दिया।

7वां और अंतिम जातिवाद और वैदिक धर्म का प्रचार न होने के कारण मुसलमान बने। मात्र एक लेख में पंडित जी को नहीं समझा जा सकता पण्डित लेखराम ने 33 पुस्तकों की रचना की। उनकी सभी कृतियों को एकीकृत रूप में कुलयात-ए-आर्य मुसाफिर नाम से प्रकाशित किया गया है।

वैदिक धर्म की महत्ता पर दिए गए भाषणों तथा वैदिक धर्म पर किए आक्षेपों के मुंहतोड़ उत्तर से कट्टरपंथी मुसलमान चिढ़ गए। परिणाम 6 मार्च, 1897 को एक मजहबी उन्मादी ने उनके पेट में छुरा घोंप कर उन्हें गंभीर रूप से घायल कर दिया। गायत्री मंत्र का जाप करते हुए वैदिक धर्म के इस दीवाने ने मात्र 39 वर्ष की आयु में धर्म के बलिवेदी पर चढ़ गये उन महान हुतात्मा को आर्य समाज का शत-शत नमन। जिन्हें अपने प्राणों की चिंता नहीं थी उन्हें चिंता थी तो सिर्फ वैदिक धर्म की। - ***आर्यसमाज***

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि:' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं।- ***सत्यप्रकाश आर्य 9650183335***

प्रथम पृष्ठ का शेष

"दलित समाज को हिन्दुओं .....

नीची जाति व दलित जैसे सम्बोधन देकर उनको मौलिक समानता के अधिकार से वंचित किया। स्वतन्त्र भारत के संविधान में तो सभी को समान अधिकार है परन्तु व्यवहार में आज भी अनेक राज्यों/क्षेत्रों में दलित वर्ग को अपमानित व उपेक्षा का शिकार होना पड़ता है, जिसका लाभ उठाकर विधर्मी (मुस्लिम-ईसाई) उन्हें हिन्दू समाज के विरुद्ध भड़का कर धर्म परिवर्तन कराते हैं। कुछ समय से दलित मुस्लिम एकता जैसे राजनैतिक नारे स्वार्थपूर्ति हेतु लगाए जा रहे हैं। डॉ. विनय विद्यालंकार ने इस बात को स्पष्ट किया कि वैदिक वर्ण व्यवस्था कर्मों पर आधारित है जो जन्म से निर्धारित नहीं होती और न कोई ऊंचा-नीचा होता है वेदों में समाज को एक शरीर से उपमा दी गई गई कि समाज रूपी शरीर में ब्राह्मण शिर, क्षत्रिय - भुजा है जो रक्षा करता है, उदर (पेट) वैश्य है जो कृषि एवं व्यापार के द्वारा समाज के अभाव को दूर करता है। कठिन से कठिन शारीरिक क्षमता वाले कार्यों का निस्पादन करने वाले वर्ण को शूद्र कहा गया है। ये चारों वर्ण एक समान रूप से से समाज कहलाते हैं।

इससे पूर्व विषय की प्रस्तावना रखते हुए कार्यक्रम के संयोजक श्री कीर्ति शर्मा ने कहा कि कुछ राजनैतिक दल अपने शूद्र स्वार्थों एवं वोट की राजनीति के कारण दलितों एवं पिछड़े वर्गों को हिन्दुओं से अलग करने पर यह बात सामने आ रही है कि बात केवल राजनैतिक दलों की नहीं है अपितु हिन्दू विरोधी अन्य ताकतें जिसमें शत्रु पड़ोसी देश की भी विघटनकारी शक्तियां इस षड़यन्त्र का हिस्सा है। वामपंथी सोच रखने वाला प्रिंट एवं इलेक्ट्रोनिक मीडिया इस षड़यन्त्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। विशेषकर सोशल मीडिया में तो हिन्दुओं के प्रति जहर उगला जा रहा है कि दलित एवं पिछड़े वर्गों को तो होली, दशहरा, दीवाली एवं भारतीय महापुरुषों के जन्मोत्सव तक भी नहीं मनाने चाहिए।

श्री कीर्ति शर्मा जी ने उपस्थित बन्धुओं से आग्रह किया कि आर्यसमाज जिसने सदैव जातिवाद, छुआछूत का विरोध किया है उसे अग्रसर होकर सामान्य समाज में इस षड़यन्त्र को रोकने के लिए जागरुकता अभियान चलाना चाहिए कि यह वर्ग हमारा अटूट अंग है और अपने जीवन में रोजी-रोटी एवं बहू-बेटी के सम्बन्धों को स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए।

डॉ. राजकुमार, प्रोफेसर दिल्ली विश्वविद्यालय एवं दलित चिन्तक ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारत राष्ट्र की ज्ञान, शौर्य एवं वैभव की सम्पन्नता होते हुए भी कैसे मुट्ठीभर आक्रान्ता आए और इस भारत राष्ट्र को लूटा तथा गुलाम बनाया, इस लूट और गुलामी का प्रतिकार भी हुआ किन्तु महर्षि दयानन्द जी एवं डॉ. हैडगेवार जैसे महापुरुषों ने इस दिशा से सोचना और चिन्तन करना आरम्भ किया कि वे कौन से कारण हैं जिससे हम गुलाम बने। इसके चिन्तन के मूल में यह उत्तर मिला कि हम जैसे अनेक जातियों में विभक्त थे जिसका लाभ मंगोल, मुगल और बाद में अंग्रेजों ने उठाया और विभाजित समाज को लूटना एवं गुलाम बनाना सहज हो गया।

भारत में चातुर्य व्यवस्था थी किन्तु यह वर्ण व्यवस्था कर्म के आधार पर थी किन्तु कालान्तर में इस व्यवस्था को जन्म के साथ जोड़ दिया जो जाति व्यवस्था में बदल गई। जाति व्यवस्था में विभिन्न काल में अलग-अलग षड़यन्त्र रचे गए और जाति व्यवस्था में घृणा, तिरस्कार, अपमान ने स्थान ले लिया। यदि हम भारत को पुनः वैभवशाली बनाना चाहते हैं तो यह धारणा स्थापित करनी पड़ेगी कि सम्पूर्ण हिन्दू एक हैं, उसका प्रत्येक जन मेरा प्रिय और भाई है। विशेषकर अपने समाज के दलित एवं पिछड़े वर्ग की ओर अधिक ध्यान देना होगा उन्हें महसूस होना चाहिए कि हम हिन्दू समाज का अटूट अंग है और सम्मानित हिस्सा है। पंडित लेखराम जी के बलिदान दिवस पर हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम सभी जातिमुक्त और जाति के आधार पर भेदभाव को समाप्त करने की प्रक्रिया को और अधिक निष्ठा के साथ व्यावहारिक जीवन पद्धति में अपनाएं, यहीं पं. लेखराम जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री योगेन्द्र चन्दौलिया, पूर्व महापौर, दिल्ली नगर निगम ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि जीवन के व्यवहारिक पक्ष को मजबूत करते हुए ही जातिमुक्त समाज की पुनः स्थापना हो सकती है। स्वर्ण समाज को अपनी मानसिकता को बदलना होगा तथा पिछड़े समाज को शैक्षिक एवं आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न बनना होगा। इसी आधार पर सभी वक्ताओं द्वारा कही बातों का साक्षात्कार हो सकेगा।

कार्यक्रम में विभिन्न आर्यसमाजों, दलित संगठनों, सामाजिक संस्थाओं एवं राजनैतिक क्षेत्र के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कई लोगों द्वारा इस प्रकार की और भी स्थानों पर गोष्ठियां आयोजित करने का सुझाव दिया। आर्यसमाज करोल बाग के मन्त्री श्री विनय आर्य के धन्यवाद प्रस्तुति करने ने पश्चात् कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

- कीर्ति शर्मा, प्रधान

मातृशक्ति

पयस्वन्तः

शरीर को स्वस्थ, बलवान् बनाने का मुख्य साधन घृत, दुग्ध आदि पौष्टिक पदार्थ

शरीर का स्वस्थ, बलवान् तथा नीरोग होना गृहस्थ जीवन को सुखी तथा आदर्शमय बनाने का मुख्य साधन है। इसका वेद ने जो ''ऊर्जस्वन्तः'' शब्द में सुन्दर वर्णन किया है उसकी व्याख्या पूर्ण हो चुकी। आशा है जो प्रियपाठक तथा पाठिकाएं अपने पारिवारिक जीवन को सुखी तथा शान्तिमय बनाना चाहते हैं वे इन उपायों को अवश्य अपने में जीवन में परिणित करेंगे।

ऊपर बताया जा चुका है कि शरीर को नीरोग और बलवान् बनाने का भोजन एक मुख्य साधन है। किन्तु वह भोजन स्वास्थ्य और बल प्रदान करने वाला होना चाहिए और यह तभी सम्भव है जबकि हमारे भोजन में दूध, दही, घृत, मक्खन आदि की पर्याप्त मात्रा विद्यमान हो। इसलिए गार्हस्थ्य जीवन को सुखमय बनाने का तीसरा साधन अथर्ववेद ने बताया- 'पयस्वन्तः' मन्त्र में प्रार्थना की गई है-

हे प्रभो! हमारे घर दूध, दही तथा घृत से भरपूर हों। उनमें दूध, दही, मक्खन आदि की कमी न हो। वास्तव में वही घर सुखमय है जिस घर में दूध, दही की कमी नहीं। जहां बालकृष्ण के सदृश नन्हे-नन्हे सुन्दर और सुडौल बच्चे मां से मक्खन मांगकर खा रहे हैं, जहां गृहदेवियां प्रातः सुमधुर गान के साथ बैठी दही बिलो रही हैं, जहां बालक-वृद्ध सभी बैठकर ताजे दुग्धपान का आनन्द ले रहे हैं। जिस घर में छाछ (मठेद्ध की कमी नहीं। जहां गौएं खड़ी अपनी प्रेममयी अव्यक्त वाणी से अपने भोले-भाले प्रिय वत्सों को पुकार रही हैं। ऐसे स्वर्गसम घरों के बालक, युवा, वृद्ध भला कभी बीमार और कमजोर रह सकते हैं।कभी बेडौल और बदसूरत बन सकते हैं। गाय का दूध तो वेद के शब्दों में अत्यन्त दुबले-पतले कृश शरीर को भी हृष्ट-पुष्ट बना देता है। बदसूरत को भी खूबसूरत कर देता है। *-क्रमशः*

- आचार्य भद्रसेन
साभार: आदर्श गृहस्थ जीवन

आदर्श गृहस्थ जीवन : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

बच्चों को दें ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजन से भरपूर शहीदों की अमरकथाओं पर आधारित कॉमिक्स

प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001,
मो. 9540040339

देश और समाज विभाजन के षड़यन्त्र का पर्दाफास
आओ! जानें मनुस्मृति का सच
स्वाध्याय के लिए प्रक्षेप रहित संस्करण

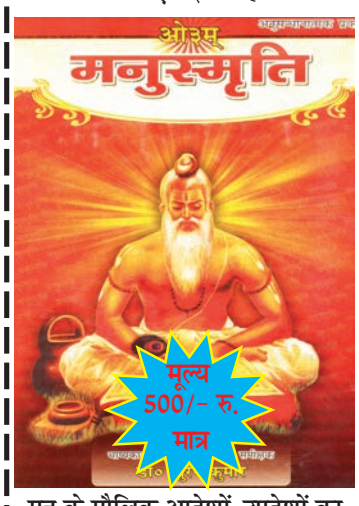

मनु के मौलिक आदेशों-उपदेशों का प्रसंगबद्ध वर्णन होने से स्वाध्यायशील महानुभावों के लिए परम उपयोगी।
मूल्य : ~~600~~/- 500/-
प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

Veda Prarthana - II
Regveda -2

Dear God Help Me Correct Whatever Deficiencies in My Body and Mind

- Acharya Gyaneshwarya

यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो
वातितृण्णं बृहस्पति में तद्दधातु।
शन्नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः।।
– *यजुर्वेद 36/3*

Yanme chhidram chakshusho hrdayasya manaso va atitrinam brahaspatih may tat dadhatu. Sham no bhavatu bhuvnasyayaspatih.
- Yajur Veda 36:3

Dear God-Giver of life, I have read many scriptures such as the Vedas, Gita, Ramayana, Darshans and Upanishads to become learned, however, I have never made enough effort for true selfstudy (swadhyaya) and introspection by reading the 'book of my mind' which records the various doings of my mind and soul. Over the years. I have not paid attention to the innumerable (beyond my remembering and counting ability) bad and sinful thoughts and inclinations that have arisen in my mind (in Vedic scriptures called antahkaran) and made any worthwhile effort to rectify them or their effect on my mind. I use my eyes to see things that are not worthy of visualizing, I listen to words, Sounds and music which are not worthy of hearing, and I eat foods which are not worthy of eating. Similarly, I think of thoughts which are not worthy of contemplation and indulge in and enjoy things which are depraved and not worthy of me. I have wasted countless houres, days, and years in trying to fulfill my klishta vrittis i.e. bad or sinful activities/inclinations/desires of my mind. Therefore, when I reflect on the long list of the sins I have performed so far in my life, my body shudders, my mind becomes restless, and my soul has no joy or peace. I wonder what miseries await me in the future.

When I am alone in a quiet place with closed eyes, without distractions. and I delve into my antahkaran, the most prominent thing I notice is a large heap of sins akin to a big bundle of goods sitting on the top of a vendor's (coolie's) head. The heap has gradually become so large and firmly established that it looks like a small hill made of firm rocks. My going to a regular weekly satsang (congregation), listening to a sermon, reading genuine holy scriptures, or a superficial self-reflection seem to have almost no effect in reducing or uprooting my klishta vrittis.

Dear God, o! Master of my life, I have now clearly recognized that I am the cause of my current misdirected knowledge, and the conduct of my life. I am the performer of bad or sinful deeds and the creator of bad Sanskars, also called kusanskars or vasanas. I am the one who progressively nurtured these bad Sanskars and shielded them from change towards virtuous Sanskars. Prompted by these bad Sanskars I have practiced adharma (followed wrong or non-virtuous path), injustice, and even sometimes cruelty. The result of all this in my life has been the presence of multitude of fears and worries, worthless attachments and bondages, unhappiness and lack of fulfillment.

Dear God, I finally feel fed up with the current miserable state of my life, I now come to You for shelter with true commitment, faith and trust to change the direction of my life towards virtue, happiness and joy. I totally surrender myself to You and Your teachings and pray with devotion for your help in eradicating the poisonous sinful thoughts that periodically arise in my mind as well as the strong desires to see, hear or experience depraved things, e.g. depraved movies/cinema and hear or sing trashy music.

When I do introspection and self-reflect in a peaceful quiet place I find that so far in my life gaining personal prosperity one way or the other, and being selfish had been the two driving forces in my interactions with others. To succeed in these goals I had at times used deception, fraud and taken advantage of the less informed and ignorant persons. I even deceived those persons who considered me their friend, companion, and well-wisher as well as an ethical, benevolent, and noble person. Dear God, the truth, however. is that I am not worthy of the good people see in me. I am overall selfish a pretender, and full of bad practices, who changes his deceptive behavior like a chameleon changes its colors, to what is suitable and convenient in a given situation. Dear God, though I can hide my thoughts from others and deceive them, nothing is hidden from You because You are All Knowing. Moreover, You reside even in My soul and know the true me.

To Be Continue....

प्रेरक प्रसंग

रोज़ा की बीवी

शास्त्रार्थमहारथी पण्डित श्री शान्ति प्रकाशजी ने यह घटना सुनाई।

एक बार कुछ यात्री गाड़ी में यात्रा कर रहे थे। उनमें से एक मौलवी साहब भी थे। मौलवीजी कुछ फल आदि खाने लगे तो साथ बैठे हिन्दू-यात्री से भी बड़े स्नेह से कहा, ''आप भी लीजिए।'' हिन्दू-यात्री ने कहा, ''मौलवी साहब! आज मेरा एकादशी का व्रत है, अत: कुछ न खाऊँगा।''

मौलवीजी बोले, ''एकादशी हमारे रोजा की बीवी है।'' हिन्दू बेचारा कच्चा-सा होकर चुप हो गया। मौलवीजी हिन्दू की इस मनोदशा पर बड़े इतराए।

समीप बैठे एक आर्यसमाजी से न रहा गया। वह बोला, ''मौलाना! आपने बजा फर्माया। एकादशी रोज़ा की ही बीवी है, परन्तु रहती हिन्दुओं के यहाँ है। अब मौलवीजी ऐसे चुप हुए कि फिर बोलने का साहस न कर पाए।

– प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु
साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

आओ ! संस्कृत सीखें

पूर्वकालिक कत्वा व ल्यप प्रत्यय (45)

गतांक से आगे....

चाहिए अर्थक यत् प्रत्यय – चाहिए या योग्य अर्थों में आ,इ,ई,उ,ऊ अन्त वाली धातुओं से यत् प्रत्यय होता है। यत् का य शेष रहता है। यह प्रत्यय कर्मवाच्य व भाववाच्य में होता है।

उदाहरण– शिशुना जलं पेयम्। यहां पा धातु से ''चाहिए'' या ''योग्य'' अर्थ का बोधक यत् प्रत्यय हुआ है अत: वाक्य का अर्थ हुआ ''शिशु के द्वारा जल पीना योग्य है''।

2. भवद्भि: पुस्तकानि देयानि। – आप सबके द्वारा पुस्तकें दी जानी योग्य हैं।
3. अतिथिना शुचि वारि पेयम्। – अतिथि के द्वारा स्वच्छ जल पीना योग्य है।
4. जनै: महापुरुषाणां कीर्ति: गेया। – लोगों के द्वारा महापुरुषों की कीर्ति गाई जानी योग्य है।
5. तया अत्र स्थेयम्। – उस (स्त्री) के द्वारा यहां रहा जाना योग्य है।
6. बालिकया पुष्पाणि चेयानि। – बालिका के द्वारा फूल चुनने योग्य हैं।
7. सेनापतिना शत्रु: जेय:। – सेनापति के द्वारा शत्रु जीता जाना चाहिए।
8. शिक्षकेण शिक्षा देया। – शिक्षक के द्वारा शिक्षा दी जानी चाहिए।
9. दुर्जनेन पापानि हेयानि। – दुर्जन के द्वारा पाप छोड़े जाने चाहिए।
10. पण्डितेन यज्ञकुण्डे हव्यम्। – पण्डित के द्वारा यज्ञकुण्ड में आहुति दी जानी चाहिए।

– क्रमश: –
आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय
मो. 9899875130

जीवन यात्रा

ये जीवन यात्रा नूतन, पुरातन, सनातन है,
या कहें भूत, भविष्य, वर्तमान का समागम है।

यात्रा में वाहन बार-बार बदलते जाते हैं,
यात्री कर्मों की कमाई से स्थान पाते हैं।

यात्रा असीमित अन्जान और महान है,
मंजिल तक पहुंचना जीवन की पहचान है।

अनन्त अनुपम अद्भुत यात्रा की नहीं है कोई सीमायें,
वर्तमान और दृष्टिमय जग से भी उपर है आशायें।

यात्रा के दौरान राह में अनेक पथिक मिलते हैं,
कोई क्षण के लिए, कोई कुछ समय के लिये,
तो कुछ रिश्तों में बदलते हैं।

साधन और साधना दोनों ही इसमें जरूरी है,
वर्ना जीवन यात्रा फिर अधूरी है।

जीवन सरिता में कर्म नैया खेते हैं,
पुरुषार्थी नाविक किनारा पा लेते हैं।

पथ सरल-सरस कटंकाकीर्ण और दुर्गम भी है,
कहीं सूखा, पतझड़, हरियाली, कहीं प्रकाश तो
कहीं तम भी है।

कटीली झाड़ियों, गहरी खाइयों के बीच चलता सफर,
चरैवेति-चरैवेति के मन्त्र से पथिक पा लेता डगर।

यात्रा की बड़ी अजीब कहानी है,
बुढ़ापा बचपन और बीच खड़ी जवानी है।

समय गुजरने पर, तय किया हुआ पथ,
पथिक भूल जाता है,
और फिर नये सिरे से, आगामी राह बनाता है।

यात्रा का क्रम शाश्वत और, है अपरिवर्तनशील,
निश्चित, निर्धारित इस व्यवस्था में नहीं चलती
कोई दलील।

यात्रा का वाहन शरीर और यात्री जीवात्मा है,
और सारी व्यवस्था संचालित करने वाला
परमात्मा है।

- प्रकाश आर्य, मन्त्री, सार्वदेशिक सभा

आर्य समाज नया बांस दिल्ली के 98वां वार्षिकोत्सव पर सामवेद खण्ड पारायणयज्ञ

आर्य समाज नया बांस दिल्ली का 98वां वार्षिकोत्सव दिनांक 5 से 11 मार्च के मध्य आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम के अन्तर्गत सामवेद खण्ड पारायण यज्ञ सम्पन्न होगा। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य संजीव रूप आर्य जी होंगे। समारोह में सायंकाल आचार्य संजीव रूप जी आर्य भजनोपदेश करेंगे व आर्य महिला सम्मेलन 8 मार्च दोपहर 2 बजे से आयोजित होगा। आर्य बाल सम्मेलन 10 मार्च प्रात: 7 से 9 बजे सम्पन्न होगा।

-राजेन्द्र चौधरी, मंत्री

आर्य सन्देश के आजीवन सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त आजीवन सदस्यों की सूचनार्थ निवेदन है कि आर्यसन्देश का आजीवन शुल्क 10 वर्ष के लिए होता है, किन्तु सभा की ओर से अभी किसी भी सदस्य की सदस्यता को निरस्त नहीं किया गया है। आर्यसन्देश साप्ताहिक आपका अपना पत्र है, जिसके सफल एवं निरन्तर प्रकाशन में आपका सहयोग सादर अपेक्षित है। अत: ऐसे समस्त सदस्यों, जिन्होंने 2007 से पूर्व आजीवन सदस्यता ग्रहण की हो वे अपना आगामी 10 वर्षीय शुल्क 1000/- रुपये भेजकर तत्काल अपनी आजीवन सदस्यता का नवीनीकरण 2027 तक करवा लेवें, जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें। – ***सम्पादक***

वैदिक विद्वानों, लेखकों एवं विचारकों से हार्दिक निवेदन

आर्यजगत के समस्त आर्य विद्वानों, लेखकों एवं विचारकों से निवेदन है कि निम्नलिखित विषयों पर अपने शोधपूर्ण व प्रमाणित लेख आर्य सन्देश में प्रकाशनार्थ प्रेषित करें। आपके लेखों को आपके नाम व पते सहित आर्य सन्देश में प्रकाशित किया जाएगा तथा पुस्तक रूप में प्रकाशित भी किया जाएगा। आपसे विशेष निवेदन है कि यदि आप किसी बात की पुष्टि के लिए किसी पुस्तक से कोई उद्धरण लेते हैं तो उस पुस्तक का नाम, प्रकाशक एवं पृष्ठ सं. अवश्य लिखें। कृपया अपना लेख ए-4 साईज के प्लेन कागज पर 1000 से 1500 शब्दों में साफ-साफ लिखें/कम्प्यूटर से टाईप कराकर भेजें। कृपया एक बार में केवल एक विषय पर लिखें। विषय वस्तु को केन्द्र में रखते हुए सकारात्मक लिखें। भविष्य में आपके लेखों को प्रवचनों के लिए भी प्रयोग किया जा सकता है, अत: मौलिकता और प्रमाणित बनाए रखें। विषय इस प्रकार हैं-

1. आर्य समाज और शिक्षा
2. आर्य समाज एवं अंधविश्वास निवारण,
3. आर्य समाज और गौ सेवा
4. अनाथालय एवं आर्य समाज
5. आर्य समाज के संगठन की विशेषताएं,
6. आर्य समाज का विश्वव्यापी विस्तार,
7. आर्य समाज एवं भारत का राष्ट्रीय आंदोलन,
8. आर्य समाज एवं सामाजिक कुरीति उन्मूलन,
9. आर्य समाज और हिंदी भाषा-आन्दोलन
10. आर्य समाज का विदेशों में राष्ट्रीय आंदोलन,

आप अपने लेख निम्न पते पर भेजें अथवा ईमेल करें -

सम्पादक, साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

Email : aryasabha@yahoo.com

वैदिक विदुषी की आवश्यकता

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित किए जाने वाले माता अमृतबाई कन्या संस्कृतकुलम् के संचालन एवं व्यवस्था के लिए आर्ष पाठ विधि से शिक्षा प्राप्त विदुषी महिला की आवश्यकता है। आकर्षक वेतन एवं सुविधाएं। संस्कृत कुलम में समस्त व्यवहार संस्कृत भाषा में ही किए जाते हैं। अत: संस्कृत भाषा/व्याकरण का पूर्ण पारंगत अभ्यर्थी जो दिल्ली में रहकर निरन्तर अपनी सेवाएं प्रदान कर सके, अपना आवेदन पत्र सभी सम्बन्धित प्रमाणपत्रों की प्रति के साथ 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 पर भेज देवें या aryasabha@yahoo.com पर ई-मेल करें। - *महामन्त्री*

चतुर्वेद-पारायण महायज्ञ

पातंजल योगधाम आर्य नगर ज्वालापुर हरिद्वार में 11 मार्च से 12 अप्रैल 2018 तक स्वामी दिव्यानन्द जी की अध्यक्षता में चतुर्वेद-पारायण महायज्ञ मनाया जाएगा। जिसमें विभिन्न संन्यासी आर्य विद्वान पधारेंगे। - *मेधानन्द सरस्वती*

ऋषि बोधोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज नेमदारगंज (नावादा) में शिवरात्रि के उपलक्ष्य में ऋषि दयानन्द बोधोत्सव पंचदिवसीय प्रभातफेरी कार्यक्रम मनाया गया। श्री संतशरण आर्य एवं श्री संजय सत्यार्थी के निदेशन में स्थानीय वक्ताओं ने ऋषि दयानन्द के उपकारों की चर्चा करते हुए वेदों के ज्ञानामृत से जनकल्याण, नारी सम्मान, ईश्वर के सच्चे स्वरूप का बोध कराया गया।

-सत्यदेव प्रसाद आर्य

खेद प्रकाश : आर्य सन्देश अंक :19 दिनांक 26 फरवरी से 4 मार्च 2018 पृष्ठ सं 7 पर प्रकाशित शोक समाचार में श्री पी.सी. बक्शी दिवंगत भूलवश प्रकाशित हो गया है जिसका हमें खेद है।

कृपया समाचार को 'आर्य समाज बी-2 बसन्त कुंज के प्रधान श्री पी.सी. बक्शी जी की माताजी का दिनांक 25 फरवरी 2018 को निधन हो गया' पढ़ा जाए। - *सम्पादक*

शोक समाचार

माता कृष्णा अजमानी का निधन

आर्यसमाज रमेश नगर, नई दिल्ली की प्रधाना माता कृष्णा अजमानी का दिनांक 24 फरवरी, 2018 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ पंजाबी बाग स्थित शमशान घाट पर किया गया।

आर्य श्री विजय गर्ग को पत्नी शोक

आर्यसमाज इन्दिरापुरम, गाजियाबाद के प्रधान आर्य श्री विजय गर्ग जी की धर्मपत्नी श्रीमती सरीता आर्या जी का 23 फरवरी, 2018 को निधन हो गया।

माता रानी आनन्द का निधन

आर्यमाज कालका जी नई दिल्ली के पूर्व प्रधान स्व. श्री जगदीश आनन्द जी की धर्मपत्नी श्रीमती रानी आनन्द जी का दिनांक 6 मार्च को प्रात: 2:30 बजे निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ नेहरु प्लेस शमशनघाट पर किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 8 मार्च को आर्यसमाज कालकाजी नई दिल्ली में सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों से निवेदन

1 अप्रैल, 2018 को मनाएं अधिकतम संख्या दिवस

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की सूचनार्थ निवेदन है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिनांक 1 अप्रैल, 2018 को अधिकतम संख्या दिवस आयोजित करने का निर्णय लिया गया है। समस्त आर्यजनों से निवेदन है कि इस दिन अपनी-अपनी आर्यसमाज के यज्ञ एवं साप्ताहिक सत्संग में अवश्य ही सम्मिलित हों। समस्त आर्यसमाजों से भी निवेदन है कि इस हेतु अपनी तैयारियां करें। अपनी आर्यसमाज के समस्त सदस्यों को सूचित करें कि इस दिन के सत्संग में सब कार्य छोड़कर अवश्य सम्मिलित हों। इस सम्बन्ध में सभा द्वारा आवश्यक दिशा निर्देश शीघ्र जारी किए जाएंगे। सभा की ओर से सब आर्यसमाजों अपेक्षित सहयोग भी उपलब्ध कराया जाएगा। सबसे अधिक उपस्थिति वाली आर्यसमाज को सभा की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। इस दिन को अपनी आर्यसमाज का ऐतिहासिक दिन बनाएं। अत: अपनी आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग की उपस्थिति पंजीका के उस दिन की उपस्थिति की फोटो प्रति अपने पत्र के साथ सभा कार्यालय - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली के पते पर भिजवाना न भूलें। - ***विनय आर्य, महामन्त्री***

20वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में 20वां परिचय सम्मेलन का आयोजन 6 मई, 2018 को आर्यसमाज कीर्ति नगर, नई दिल्ली में प्रात: 10 बजे से किया जाएगा।

समस्त आर्य परिवारों से अनुरोध है कि अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से सम्बन्ध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्रातिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ '**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**' के नाम **300/- रुपये** का डिमाण्ड ड्राफ्ट संलग्न भेजें अथवा 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम **खाता संख्या 910010001816166 IFSC - UTIB0000223 एक्सिज बैंक करोल बाग शाखा** में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेजें। आवेदन भेजने की **अन्तिम तिथि 26 अप्रैल, 2018** है। इसके बाद प्राप्त आवेदनों को विवरणिका में प्रकाशित नहीं किया जा सकेगा। पंजीकरण फॉर्म नीचे प्रकाशित किया गया है तथा **www.thearyasamaj.org** से डाउनलोड किया जा सकता है। आप अपना/अपने बच्चों का पंजीकरण **www.matrimony.thearyasamaj.org** पर ऑनलाइन भी कर सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

अर्जुनदेव चढ्ढा, राष्ट्रीय संयोजक (मो. 9414187428)

एस. पी. सिंह, संयोजक, दिल्ली (मो. 9540040324)

पंजीकरण संख्या : ।। ओ३म् ।। रसीद संख्या :

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

20 वाँ आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सम्मेलन कार्यालय : 15, हनुमान रोड़, नई दिल्ली - 110001 टैलिफैक्स :- 011-23360150, 23365959

Email: aryasabha@yahoo.com website : www.thearyasamaj.org

पंजीकरण प्रपत्र

: व्यक्तिगत विवरण :

"आवेदक अपना फोटो अनिवार्य रुप से लगाएं।"

1. युवक/युवती का नाम :.................................. गोत्र..................
2 जन्मतिथि:.................... स्थान : ....
3. रंग.................... वजन .... लम्बाई ....
4. योग्यता (शैक्षणिक एवं अन्य) : ....

....

5. युवक/युवती सेवारत, व्यवसाय में है तो उसका विवरण/पता/...........................

....व्यक्तिगत मासिक आय....................

: पारिवारिक :

6. पिता/सरंक्षक का नाम .... व्यवसाय: .... मासिक आय..............
7. पूरा पता:...

....

दूरभाष :.................... मोबा.:.................... ईमेल :....................

8. मकान निजी/किराये का है...
9. माता का नाम :.................... शिक्षा :.................... व्यवसाय : ....
10. भाई - अविवाहित....................विवाहित.................... । बहिन- अविवाहित....................विवाहित.................... ।
11. उम्मीदवार/अभिभावक किस आर्यसमाज के सदस्य हैं? (आवश्यक)..............................
12. युवक/युवती कैसी चाहिए (संक्षिप्त टिप्पणी दें) ....
13. युवक/युवती यदि इनमें से हो तो सही पर (✓) लगाएं : ☐ विधुर : ☐ विधवा : ☐ तलाकशुदा : ☐ विकलांग :
14. विशेष:

मैं....................घोषणा करता हूँ कि इस फार्म में मेरे द्वारा दी गई समस्त जानकरी एवं तथ्य पूर्णतया सत्य है।

दिनांक : ....

हस्ताक्षर अभिभावक/ प्रत्याशी

कार्यक्रम स्थल :- आर्य समाज, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015

दिनांक : 6 मई 2018, रविवार । समय :- प्रात: 10 बजे से

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :

श्री अर्जुनदेव चढ्ढा, राष्ट्रीय संयोजक मो. 09414187428, श्री एस.पी. सिंह, संयोजक- दिल्ली क्षेत्र मो. 09540040324

आर्य समाज, कीर्ति नगर, नई दिल्ली- 110015

श्री ओमप्रकाश आर्य, प्रधान, मो 09911155285, श्री सतीश चढ्ढा, मंत्री, मो 09313013123, सुरेश तेजी, कोषाध्यक्ष, मो. 09910167560

नोट : 1. ई-मेल एड्रेस, मोबाईल व फोन नम्बर लिखना आवश्यक है

2. विकलांग युवक-युवतियों तथा विधवा एवं तलाकशुदा युवतियों के लिये रजिस्ट्रेशन शुल्क 50% छूट होगी।
3. विवाह सम्बन्ध बनाने से पूर्व दोनों पक्ष अपनी पूर्णसन्तुष्टि कर लें। सभा इसके लिए उत्तरदायी नही होगी।
4. आप इस फार्म को www.thearyasamaj.org से डाउनलोड कर भेज सकते हैं। फोटो कॉपी प्रति भी मान्य है।
   यह फार्म ऑनलाइन भी भर सकते है लिंक - matrimony.thearyasamaj.org
5. पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधी सभा नई दिल्ली के नाम रु. 300/-(तीन सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट संलग्न कर अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम एक्सिज बैंक खाता सं. 910010001816166 करोल बाग शाखा IFSC-UTIB0000223 मे जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेजें। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15- हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 के पते पर कार्यालय मे सम्मेलन की तारीख से 15 दिन पूर्व भेज दे, ताकि प्रत्याशी का विवरण पुस्तिका मे प्रकाशित किया जा सके।
6. माता-पिता/अभिभावक रजिस्ट्रेशन शुदा पुत्र/पुत्री को सम्मेलन में अवश्य लावें। कॉलम नं. 11 भरना आवश्यक है।
7. रजिस्ट्रेशन शुल्क 300/- प्राप्त किये जाने पर ही रजिस्ट्रेशन फार्म स्वीकार किया जायेगा।

युवक और युवतियाँ परस्पर एक-दूसरे के गुण-कर्म और स्वभाव मिलने पर ही विवाह करें- महर्षि दयानन्द सरस्वती

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 5 मार्च, 2018 से रविवार 11 मार्च, 2018

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 8/9 मार्च, 2018

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 7 मार्च, 2018

इस वर्ष भारत की राजधानी नई दिल्ली में होगा

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन - 2018 दिल्ली

25-26-27-28 अक्तूबर, 2018

समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थानों - विद्यालयों, गुरुकुलों, डी.ए.वी. स्कूलों एवं सहयोगी संस्थानों से निवेदन है कि महासम्मेलन की उपरोक्त तिथियों को नोट करें तथा इन तिथियों में आपना कोई भी आयोजन न रखें और दल-बल सहित अधिकाधिक संख्या में महासम्मेलन में पहुंचकर संगठन शक्ति का परिचय दें तथा इस सूचना को विभिन्न माध्यम से प्रचारित करें।

निवेदक

सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

धर्मपाल आर्य, प्रधान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

प्रतिष्ठा में,

तेजी से बढ़ रहे हैं आर्यसमाज YouTube चैनल के दर्शक

60 लाख से ज्यादा लोगों ने देखा अब तक

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें।

यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना चाहते हैं तो घंटी बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।

यदि आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री

सम्पन्न

(विस्तृत रिपोर्ट एवं चित्रमय रंगीन झांकी अगले अंक में)

जुड़िए आर्यसमाज के फेसबुक से
जोड़िए अपने मित्रों को और
दीजिए सन्देश आर्यसमाज का

Arya Sandesh
www.facebook.com/samajaryasandesh

फेसबुक : आर्यसन्देश साप्ताहिक

Arya Samaj Facebook
www.facebook.com/arya.samaj

फेसबुक : आर्यसमाज

Vedic Prakashan
www.facebook.com/vedicparkashan

फेसबुक : वैदिक प्रकाशन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह